अपना ही दिन यह आज का,
दुनिया से जाकर बोल दो,
ऐसे जागो रे साथियों,
दुनिया की नजरें खोल दो।

जियो तो सदा इसी के लिए,
रहे अभिमान और यह हर्ष,
न्योछावर कर दे हम सर्वस्व,
हमारा प्यारा भारतवर्ष।

मेरे समक्ष प्रस्तुत हर उस भारतवासी को, जिसके हृदय में आज भी भारत को एक स्वराज्य से सुराज बनाने की अग्नि भभक रही है, सादर प्रणाम।

आज इस हर्ष दिवस पर मैं आप सभी के साथ कुछ बातें करना चाहती हूं। हमारे देश में स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस - दोनों की अहम भूमिकाएं हैं। 15 अगस्त हमें याद दिलाता है स्वतंत्रता का महत्व; शहीदों के लहू का स्मरण करवाता है और भारत को एक सुराज्य बनाने की प्रेरणा भी दे जाता है। फिर भी 26 जनवरी का महत्व 15 अगस्त जितना या उससे अधिक क्यों है? यह इसलिए है क्योंकि 26 जनवरी हमें याद दिलाता है हमारे संविधान की सभ्यता, संस्कृति और अनुशासन। आखिर वह आजादी किस मूल्य की जिसे अनुशासन में बांधकर प्रगतिशील होने की ओर अग्रसर ना किया जा सके?

आज भारत में 50 करोड़ युवा हाथ है, जो भारत को हर क्षेत्र में - आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक। हर क्षेत्र में उत्तम बनाने के प्रयास में, भारत इन 50 करोड़ युवा के साथ क्या कुछ नहीं कर सकता? परंतु यह तभी संभव है जब मन में प्रेम हो और शरीर में अनुशासन। एक विद्यार्थी के रूप में भी हमारे जीवन में अनुशासन, धैर्य और ध्यान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। हम अक्सर अपनी स्वतंत्रता और यौवन को सर्वोच्च स्थान दे बैठते हैं। यह हमारी भूल है; हमें समझना होगा कि नियमों का पालन करने से स्वतंत्रता नहीं हो जाती। बड़ों का आदर करने से हम छोटे नहीं बन जाते, बल्कि उनके आशीर्वाद से और ऊंची बुलंदियों को छू पाते हैं। हमारा संविधान हमें जीवन की अनेक सीखे. दे गया - जहां अधिकार है वहां कर्म है, जहां समानता है वही लोकतंत्र, और जहां अनुशासन है वही स्वतंत्रता है।

Since today is the day that we are celebrating the establishment of our constitution, another thing that our constitution teaches us is the importance of having a vision, because it was the vision of our freedom fighters and members of the Constituent Assembly Drafting Committee that envisioned the India we are living in today. The youth of India has been labelled as impulsive. They say we make quick decisions and try to sort out only the present. We need to learn to plan things and we need to learn to sit with ourselves and introspect over our mistakes, our choices and our plans for the future, so that we can make India a better India.

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता
या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता
नमस्तस्ए नमस्तस्ए नमस्तस्ए नमो नमः

आज के दिन जब हम अपने भूत का स्मरण करते हैं, अपने भविष्य के लिए दूरदर्शिता विकसित करने की बातें करते हैं, तो यह आवश्यक है कि हम वर्तमान में अपनी कृतज्ञता भी प्रस्तुत करें। हमें धन्यवाद देना चाहिए न केवल

स्वतंत्रता सेनानियों का, संविधान के लेखकों का, बल्कि आज के भारत के सरहद पर खड़े जवानों का, कोविड-19 चिकित्सकों का, हमारे जीवन में ज्ञान के दीपक जला रहे अध्यापकों का, घर पर बैठे बड़े बुजुर्गों का और हर उस व्यक्ति का जिसने हमें स्वतंत्रता की महक और गणतंत्रता की चेक जीने का अवसर दिया है। हमें अपनी शक्ति अपनी संस्कृति का सम्मान करना आवश्यक है।

We should be proud that we are the daughters and sons of this country-India.

हमें याद रखना होगा कि हम कर्म भूमि, धर्म भूमि, पूज्य भूमि, स्वर्ण भूमि - भारत की संतान हैं। हम वंशज हैं बलशाली भीम के, शांतिप्रिय महात्मा गांधी के, क्रांति प्रिय सुभाष चंद्र बोस के, न्याय प्रिय अशोक सम्राट के और प्रेम स्वरूप भारत माता के। हम शांति भी जानते हैं, क्रांति भी जानते हैं; मित्रता भी जानते हैं और समय आने पर उत्तर देना भी जानते हैं। हम कोमलता भी जानते हैं, हम कठोरता भी जानते हैं; हम सेवा भी जानते हैं, हम शासन भी जानते हैं।

I call upon all the proud citizens of India to promise to themselves, never to let the Indian flag go down, never in spirit or in soul क्यूंकि

जियो तो सदा इसी के लिए,
रहे अभिमान और यह हर्ष,
न्योछावर कर दे हम सर्वस्व,
हमारा प्यारा भारतवर्ष।

भारत माता की जय!